शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 फरवरी 2013

रामकुमार वर्मा की काव्य रचना – प्रक्रिया

डॉ. भूपेन्द्र हरदेनिया
शासकीय नेहरु डिग्री कालेज
सबलगढ़,जिला मुरैना

शोध संक्षेप

किसी भी रचना का सरोकार उसके रचनाकार से होता है और उस रचनाकार के रचनाकाल और रचनाकारिता की पड़ताल करना, उसके सृजन की प्रक्रिया की खोजबीन करना तथा उसके आधार पर यह स्पष्ट करना कि अमुक रचना इस प्रकार रची गई होगी या इस परिस्थिति में या सृजन की उक्त मनोभूमि में उसका निर्माण हुआ होगा अथवा दूसरे शब्दों में कहें तो कवि सिसृक्षण में काव्य निर्मिती की जिस प्रक्रिया से गुजरता है वही काव्य रचना–प्रक्रिया है। प्रत्येक रचनाकार की अपनी–अपनी रचना–प्रक्रिया होती है और पृथक–पृथक भी। अगर कवि समालोचना का काम भी करता है तो हमें उसकी कविता के साथ–साथ उनके समीक्षा कर्म में भी वह स्वयं की रचना–प्रक्रिया के बारे में कुछ न कुछ कहता हुआ नजर आता है। सुमित्रानन्दन पंत, महाप्राण निराला, मुक्तिबोध, अज्ञेय, आदि कई ऐसे कवि हुए हैं, जिनके आलोचना कर्म में उनकी रचना–प्रक्रिया के सूत्र तो मिलते हैं, साथ ही उनकी कविताओं के माध्यम से भी रचना–प्रक्रिया के बीज उपलब्ध हो जाते हैं। डॉ. रामकुमार वर्मा का नाम छायावादी कवियों में सर्वाधिक उल्लेखनीय है। वे अच्छे समालोचक होने के साथ–साथ एक अच्छे कवि भी थे। जिसका स्पष्ट स्वरूप उनकी सृजन–प्रक्रिया से सम्बन्धित दृष्टिकोण में भी देखने को मिलता है।

प्रस्तावना

डॉ. रामकुमार वर्मा सम्पूर्ण काव्य के सृजन को वैचारिक आयाम की प्रक्रिया मानते हैं। उनके अनुसार विचार या भाव जो कवि के अन्दर किसी भी समय उत्पन्न हो जाते हैं, वे स्वयं ही कविता के रूप का निर्माण कर लेते हैं। उनके शब्दों में, ''विचार उठते हैं, मैं उन्हें रोक नहीं सकता और कभी टहलते हुए, कभी बिस्तर पर लेटे हुए, शाम की धुँधली छाया में या ऊषा के खिलते प्रकाश में कुछ गुनगुनाता हूँ और कविता जिसे आप श्रेष्ठ कविता कहते हैं अपना रूप निर्माण कर लेती है।''[1] रामकुमार वर्मा के विचार पर दृष्टिपात करने के बाद हमें महर्षि वाल्मीकि की कुम्भोच्छलनवत कविता के जन्म की स्थिति याद आ जाती है, जिस प्रकार महर्षि वाल्मीकि के हृदयोदगार क्रोंचवध को देखकर एकदम प्रस्फुटित हो जाते हैं और कविता का निर्माण हो जाता है। उसी प्रकार रामकुमार वर्मा की कविता का जन्म होता है बस अन्तर इतना है कि उनके सृजन के क्षण में इतना आवेग नहीं रहता जितना वाल्मीकि के सृजन के समय रहा होगा। क्योंकि वे मानते हैं कि उनकी अवली में विचारों का चिंतन चलता है, जिन्हें वे रोक नहीं पाते।

वर्मा जी सम्पूर्ण सृजन–प्रक्रिया के अन्तर्गत भावों को अनिवार्य मानते हैं। और उनका कहना है कि हृदय में न समा सकने की स्थिति में ये भाव भाषा के माध्यम से काव्य का स्वरूप धारण कर लेते हैं। उनके अनुसार ''संसार में कविता की सृष्टि उस समय से आरम्भ हो गई होगी जब करुणा, आकर्षण और आत्म–समर्पण की तीनों भावनाओं ने कवि के हृदय में एक ऐसी विह्वलता भर दी होगी जिसे वह अपने हृदय में संभाल नहीं सका होगा और ये तीनों भावनाएं त्रिवेणी की भाँति एक होकर भाषा के पथ पर बढ़ी होंगी।''[2] अब हमें ये जानना है कि ये तीनों भावनाएं जिन्हें डॉ0 रामकुमार वर्मा ने करुणा, आकर्षण और आत्म–समर्पण कहकर कविता की रचना–प्रक्रिया में आवश्यक माना है वे किस स्तर तक महत्त्वपूर्ण हैं और किस भावना

का क्या कार्य सिसृक्षण के दौरान रहता है। पहले हम करुणा को लेते हैं–काव्य सृजन–प्रक्रिया में करुणा एक बीज भाव का कार्य करती है, यह एक गैस के लाइटर की चिंगारी जैसी होती है। सीधे–सीधे इससे काव्य रचना–प्रक्रिया शुरू होती है। कवि के अन्दर अगर करूणा है तो वह किसी भी घटना से जल्द ही प्रभाव ग्रहण करेगाा और वह प्रभाव अनुभूति बनकर उसके हृदय में घर करेगा और मन की असीम गुहा में पैठ करेगा। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने अपने करुणा निबन्ध के माध्यम से मन के प्रत्येक भावों को स्पष्ट किया और बताया कि सभी भावों की जननी करुणा ही है। अतः कविता की सृजन–प्रक्रिया का पहला चरण करुणा के माध्यम से अनुभूति ग्रहण करना या प्रभाव ग्रहण करना और अगर प्रभाव पास में है तो आकर्षण अपने आप ही पैदा हो जाता है। प्रभाव प्रत्येक चीज से आ सकता है लेकिन आकर्षण किसी एक विशेष भावना या घटना से ही आ पाता है। आकर्षण के बाद यह स्पष्ट हो जाता है कि कवि को कविता किस भावना पर लिखनी है, कवि जिस भावना से आकर्षित होगा उसी पर कविता करने का प्रयत्न करेगा। यह काव्य सृजन–प्रक्रिया का दूसरा स्तर है, प्रथम स्तर करुणा या भाव का जन्म लेना ही है। द्वितीय स्तर पर कवि अपने वैचारिक चिंतन से गुजरकर कविता की विषय–वस्तु निश्चित कर लेता है कि कविता इस विषय–वस्तु पर लिखनी है। इसके बाद आती है आत्म–समर्पण की बात। यह सृजन–प्रक्रिया का तीसरा क्षण जब कवि अपने आपको, अपने व्यक्तित्व को, अपनी विषय–वस्तु को काव्य सृजन के उस क्षण को समर्पित कर देता है जिस क्षण वह कविता लिखने बैठता है। या यूं कहें कि सम्पूर्ण तल्लीनता से एकरस होकर इस क्षण में कविता को जन्म देता है तथा उसे सिवाय कविता के किसी भी चीज की सुध–बुध नहीं रहती, यहां तक कि स्वयं की भी नहीं। अतः डॉ.रामकुमार वर्मा ने इन तीन भावनाओं के माध्यम से कविता के सृजन के तीन क्षण माने हैं। कविता इन तीन स्तरों से गुजरकर अपना रूप प्राप्त कर पाती है। संक्षिप्त में हम कहें तो काव्य सिसृक्षण में भाव ही अनुभूति से अभिव्यक्ति तक सक्रिय रहते हैं, और एक सौंदर्यपूर्ण कविता की निर्मिती करते हैं।

डॉ. रामकुमार वर्मा काव्य अपितु साहित्य मात्र की सृजन–प्रक्रिया का कवि की मानसिकता से घनिष्ठ संबंध मानते हैं ''साहित्य रचना एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसका संबंध मन की परिस्थितियों से उसी प्रकार जुड़ा है, जिस प्रकार किसी फूल से उसकी सुगन्ध जुड़ी रहती है।''[3] यह बात स्वाभाविक है कवि या रचनाकार की व्यक्तिगत परिस्थितियां, उसका परिवेश, और उसकी मनःस्थिति का सम्बन्ध उसकी रचना–प्रक्रिया से अटूट होता है, वह जिस परिस्थिति में रहेगा उसका प्रभाव उसकी काव्य निर्मिती में अवश्य रहेगा। उदाहरण के रूप में हम छायावाद के आधार स्तम्भ कवि पंत, प्रसाद, निराला, और महादेवी को ले सकते हैं। इन कवियों का जैसा व्यक्तित्व था, जिस परिवेश में इन्होंने जन्म लिया, जिन–जिन परिस्थितियों से इन्हें गुजरना पड़ा उन सबकी स्पष्ट अभिव्यक्ति हमें इनके काव्य में मिलती है।

डॉ.रामकुमार वर्मा के अनुसार काव्य रचना–प्रक्रिया में कवि या रचयिता की विशिष्ट प्रतिभा या चेतना ही प्रमुख रूप से सक्रिय रहती है, जिसमें विविध अनुभूतियाँ अनायास ही स्फुरित होती रहती हैं। कार्य कारण की सामान्य परम्परा का निर्वाह इसमें नहीं होता। उनकी दृष्टि में ''साहित्य रचना कारण और कार्य की श्रृंखला से उतनी संबंधित नहीं, जितनी साहित्यकार अथवा कलाकार की प्रतिभा या विशिष्ट प्रज्ञा से,

जिसमें नाना प्रकार की अनुभूतियाँ शतदल कमल की भाँति प्रस्फुटित हो उठती हैं और स्वयं कलाकार उन अनुभूतियों के स्रोत से अपरिचित रह जाता है।''[4] इनके विचार से अनुभूतियों का उद्‌गम खोजना स्वयं कवि के लिए भी कठिन है, क्योंकि बाह्य जगत् की कार्य–कारण श्रृंखला को स्थापित करना इस स्रोत में प्रायः सहज और सम्भव नहीं है। डॉ. वर्मा ने सृजन के संदर्भ में यह भी स्पष्ट किया है कि कवि की मनःस्थिति के अनुसार ही घटनायें उसे प्रभावित करती हैं, चाहे वे बड़ी हों या छोटी।

डॉ. वर्मा ने माना है कि मामूली सी घटना भी अन्तर में प्रतिक्रिया की लहर उठाकर लिखने को विवश कर देती है। इन्होंने लिखा है कि ''छोटी से छोटी घटनाओं ने मुझे लिखने के लिए विवश कर दिया है। छोटी–छोटी घटनाएं कभी–कभी दिल को हिला देती हैं, वे नावक के तीर की तरह गम्भीर घाव कर देती हैं। जैसे ही यह घटना हृदय पर आघात करती है, वैसे ही मन में एक गम्भीरता आ जाती है, चाहे जितने विनोद की घटना हो। वह जब लेखनी से उतरने के लिए मचलने लगती है तो मन में गम्भीरता आ ही जाती है, क्योंकि तब वह विषय अपना अंतरंग भाग अधिक से अधिक बढ़ाने की चेष्टा करता है। अपना निर्माण करने लगता है।''[5] वर्मा जी ने यहाँ दो तथ्यों की ओर संकेत किया है। प्रथम, घटना की प्रतिक्रिया अनुकूल ही हो, यह आवश्यक नहीं है, प्रतिकूल भी हो सकती हो। यह रचयिता की तत्कालीन मानसिक स्थिति पर निर्भर है। द्वितीय, घटना अनुकूल या प्रतिकूल प्रतिक्रियायें उद्‌बुद्ध करके अपना प्रसार करती हैं। अनुभूति लोक के द्वार घटना के आघात से खुल जाते हैं, जो वर्षों पहले किन्हीं अन्य परिस्थितियों में उठे थे।

वर्मा जी ने बाह्य घटना की प्रतिक्रिया का सूत्र निरूपण निजी अनुभव के आधार पर किया है। उनका कहना है कि ''घटना जब मन पर चोट करती है तो मन में विचार की क्रिया और प्रतिक्रिया उसी तरह आरम्भ हो जाती है। जिस तरह बारूद की बत्ती में आग लगने पर आग बारूद के कणों को जलाती हुई आगे बढ़ने लगती है और बारूद के कण जैसे उस आग को खींचते हुए अपने प्राणों तक ले जाना चाहते हैं। विचारों में एक क्रान्ति सी होने लगती है और वे एक दूसरे से संघर्ष करते हुए आगे आने की चेष्टा करने लगते हैं। इस चेष्टा में ऐसा भी संभव हो जाता है कि तत्काल उठे हुए विचारों में ऐसे विचार भी उठते चले आते हैं जो बरसों पहले किसी विशेष परिस्थिति में किसी विशेष घटना स्थल पर उठे थे।''[6] यहाँ वर्मा जी ने स्पष्ट कर दिया है कि सृजन के क्षण में विचारों का द्वंद्व चलता है, जिसमें वर्षों पुराने भाव ही वैसी ही विचारानुभूति होने पर उठ जाते हैं, जो कि कवि के संस्कारादि थे।

इस सम्पूर्ण सृजन–प्रक्रिया में वे अवसर विशेष की बात मानते हैं, जो कि काव्योन्मेष के क्षण में किसी अवसर विशेष पर प्रतिभा के द्वारा सहसा ही उत्पन्न हो जाती है। उनके शब्दों में श्रेष्ठ कविता भी संयोग से ही बनती है। वह भी प्रतिभा के किसी अवसर विशेष पर जाग्रत होने पर। जब प्रतिभा जागृत होती है तो कवि के भाव अनायास किसी विशेष अवसर पर सृजित हो जाते हैं और कविता का स्थूल रूप हमारे सामने आता है। डॉ. वर्मा ने यह प्रतिभा की स्वीकृति के साथ यह भी स्पष्ट किया है कि सृजन–प्रक्रिया में कवि को कोई परिश्रम नहीं करना पड़ता वह तो स्वतः ही संचालित होती है। उनके शब्दों में ''कविता बिना किसी परिश्रम के आप से आप हृदय में उठती है और रात्रि के निरभ्र आकाश में चमकते हुए तारों की भाँति फैल कर सारे आकाश को व्याप्त कर लेती है। किसी भी कारीगर को चाहे वह देवता ही क्यों न हो

एकाएक तारे को आकाश में ठोंक कर जड़ने कविता की सृजन प्रक्रिया एक अचेतन, अनायास और विशेष क्षण की प्रक्रिया है। जिसमें भावनाओं, घटनाओं का सृजन होता है तथा उसके लिए कवि को कोई परिश्रम नहीं करना पड़ता। परिश्रम सिर्फ इतना हो सकता है कि वह अपनी तूलिका से अभिव्यक्ति करे, और परिष्करण या परिमार्जन करे।

निष्कर्ष

अतः डॉ.रामकुमार वर्मा की रचना–प्रक्रिया से सम्बन्धित वक्तव्यों का निष्कर्ष रूप में अनुशीलन करते हुए कहा जा सकता है कि काव्य सृजन–प्रक्रिया सिसृक्षण में प्रमुख तीन करुणा अथवा विविध भावों की अनुभूति होना, फिर प्रभाव ग्रहण और आकर्षण तत्पश्चात तृतीय स्तर पर कवि पूर्ण आत्म–समर्पण के दौर से गुजरते हुए कविता का सृजन करता है। जिसमें कवि की शक्ति उसकी प्रतिभा या प्रज्ञा है, जो उससे उसका काव्य सृजन का श्रम करवा लेती है, उसमें कवि को अधिक की आवश्यकता नहीं पड़ती।''[7] स्पष्ट है कि परिश्रम नहीं करना पड़ता। काव्य सृजन–प्रक्रिया एक विशेष वैयक्तिक अनुभूति के क्षण में पूर्णता को प्राप्त होती है। कवि इस सम्पूर्ण प्रक्रिया में अपने हृदयस्थ भावों की अभिव्यक्ति अपने शब्दों के माध्यम से करता है। यह सब वह सिसृक्षण के दौरान अचेतन रूप से करता है।

संदर्भ

1–डॉ0 रामकुमार वर्मा, विचार दर्शन, प्रथम संस्करण, साहित्य निकुंज 19, शिवचरणलाल रोड, प्रयाग, पृ0 92
2–वही, पृ0 93
3–डॉ0 कृष्णचन्द्र गुप्त, छायावादी कवियों के काव्यादर्श, संस्करण 1972, अनुराधा प्रकाशन, फूलबाग कालोनी, सूरजकुंड रोड, मेरठ, पृ0 25
4–वहीं, पृ0 88
5– डॉ0 रामकुमार वर्मा, विचार दर्शन, प्रथम संस्करण, साहित्य निकुंज 19, शिवचरणलाल रोड, प्रयाग, पृ0 93
6–वही, पृ0 94
7–वही, पृ0 94